International Journal of Advanced Educational Research
www.multidisciplinaryjournals.org
ISSN: 2455-6157
Received: 02-04-2023, Accepted: 18-04-2023, Published: 05-05-2023
Volume 8, Issue 2, 2023, Page No. 10-12

धोंडो केशव कर्वे द्वारा विधवा विवाह के लिए किए गए प्रयास

लता रानी चौहान
असिस्टेंट प्रोफेसर, बी.स. अनंगपुरिया इंस्टीट्यूट ऑफ लॉ आलमपुर, फरीदाबाद, हरियाणा, भारत

सारांश
महर्षि डॉ धोडो केशव कर्वे प्रसिद्ध समाज सुधारक थे। उन्होंने महिला शिक्षा और विधवा पुनर्विवाह के लिए महत्वपूर्ण कार्य किए। उन्होंने महिला शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई अपना पूरा जीवन विभिन्न आंदोलन और संघर्षों में भी समाज सेवा करते हुए समाप्त कर देने वाले महर्षी करवे ने अपने कथन को बिल्कुल सच साबित कर दिया है। उन्होंने अपना जीवन महिला उत्थान को समर्पित कर दिया। डॉक्टर ढूंढो केशव कर्वे को महर्षी करवे के नाम के साथ बड़े सम्मान और आदर के साथ याद किए जाने वाले आधुनिक भारत के सबसे बड़े समाज सुधारक और उद्धारक माने जाते हैं॰ उनके द्वारा मुंबई में स्थापित एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय भारत का प्रथम महिला विश्वविद्यालय है। वह वर्ष 1891 से वर्ष 1914 तक पुणे के फर्ग्युसन कॉलेज में गणित के अध्यापक थे। उन्हें वर्ष 1958 में भारत रत्न से भी सम्मानित किया गया।

मूल शब्दः केशव कर्वे, महिला शिक्षा और विधवा पुनर्विवाह

प्रस्तावना
डॉक्टर धोंडो केशव कर्वे का जन्म महाराष्ट्र के गुरूर नामक कस्बे शेरावली जिला रत्नागिरी में एक गरीब परिवार में हुआ था, पिता का नाम श्री केशव पाल और माता का नाम श्रीमती लक्ष्मी बाई था स आरंभिक शिक्षा मुरूर में हुई सतारा में ढाई वर्ष अध्ययन करके मुंबई के रॉबर्ट मनी स्कूल में दाखिल हुए, 1884 ईसवी में उन्होंने मुंबई विश्वविद्यालय से गणित विषय लेकर बी. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की तदुपरांत एलफिंस्टन स्कूल में अध्यापक हो गए। महर्षी कर्वे का विवाह 15 वर्ष की आयु में ही हो गया था और बी.ए.पास करने तक उनके पुत्र की आयु ढाई वर्ष हो चुकी थी। अतः खर्चा चलाने के लिए स्कूल की नौकरी के साथ–साथ लड़कियों के दो हाई स्कूलों में भी अंशकालिक काम भी करते थे। गोपाल कृष्ण गोखले के निमंत्रण पर 1891 ईसवी में पुणे के प्रख्यात फ़र्ग्युसन कॉलेज में प्राध्यापक बन गए। यहां लगातार 23 वर्ष तक सेवा करने के उपरांत 1914 ईस्वी में उन्होंने अवकाश ग्रहण कर लिया।

भारत में हिंदू विधवाओं की दयनीय और सोचनीय दशा देखकर महर्षी करवे मुंबई में पढ़ते समय ही विधवा विवाह के समर्थक बन गए थे, उनकी पत्नी का देहांत भी उनके मुंबई प्रवास के बीच हो चुका था अतः 11 मार्च 1893 को उन्होंने गोंडवाली नामक विधवा से विवाह कर विधवा विवाह संबंधी प्रतिबंध को चुनौती थी। इसके लिए उन्हें घोर कष्ट सहने पड़े मुरुड़ में उन्हें समाज बहिष्कृत घोषित कर दिया गया, उनके परिवार पर भी प्रतिबंध लगाए गए। महर्षी कर्वे ने विधवा विवाह संघ की स्थापना की किंतु शीघ्र ही उन्हें पता चल गया कि इक्के दुक्के विधवा विवाह का प्रसार करने से विधवाओं की समस्या हल होने वाली नहीं, अधिक आवश्यक यह है कि विधवाओं को शिक्षित बनाकर उन्हें अपने पैरों पर खड़ा किया जाए ताकि वह सम्मान पूर्ण जीवन बिता सकें।

अतः 1896 म उन्होंने अनाथ बालिका आश्रम एसोसिएशन बनाया और जून 1980 में पुणे के पास इंगड़ी नामक स्थान में एक छोटा सा मकान बनाकर अनाथ बालक आश्रम की स्थापना की। 4 मार्च 1960 को उन्होंने महिला विद्यालय की स्थापना की जिसका अपना भवन 1911 ई.तक बनकर तैयार हो गया था।

काशी के बाबू शिव प्रसाद गुप्ता जापान गए थे और वहां के महिला विश्वविद्यालय से बहुत प्रभावित हुए थे जापान से लौटने पर 1915 ईस्वी में गुप्ता जी ने उक्त महिला विश्वविद्यालय से संबंधित एक पुस्तिका महर्षी कर्वे को भेजी, उसी वर्ष दिसंबर में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का मुंबई में अधिवेशन हुआ कॉग्रेस अधिवेशन के साथ ही "नेशनल सोशल कॉन्फ्रेंस" का अधिवेशन होना था जिसके अध्यक्ष महर्षी कर्वे चुने गए। गुप्त जी द्वारा प्रेषित पुस्तिका से प्रेरणा पाकर महर्षि कर्वे ने अपने अध्यक्षीय भाषण का मुख्य विषय महाराष्ट्र में महिला विश्वविद्यालय को बनाया। महात्मा गांधी ने भी महिला विश्वविद्यालय की स्थापना और मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा देने के विचार का स्वागत किया। फल स्वरुप 1916 ईस्वी में महर्षि कर्वे के अथक प्रयासों से पुणे में महिला विश्वविद्यालय की नींव पड़ी जिसका पहला कॉलेज महिला पाठशाला के नाम से 16 जुलाई 1916 ईस्वी को खुला। महर्षि कर्वे इस पाठशाला के प्रथम प्रिंसिपल बने लेकिन धन की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए उन्होंने त्यागपत्र दे दिया और धन संग्रह के लिए निकल पड़े, 4 वर्ष में ही सारे खर्चे निकालकर उन्होंने विश्वविद्यालय के कोष में ₹ 216000 से अधिक धनराशि जमा कर ली।

इसी बीच मुंबई के प्रसिद्ध उद्योगपति सर विट्ठल दास दामोदर ठाकरसी ने इस विश्वविद्यालय को 1500000 रुपए दान दिए अतः विश्वविद्यालय का नाम श्री ठाकुर जी की माता के नाम पर श्रीमती नत्थीबाई दामोदर ठाकरसी विश्वविद्यालय रख दिया गया और कुछ वर्ष बाद इसी पुणे से मुंबई स्थानांतरित कर दिया गया। 70 वर्ष की आयु में महर्षि कर्वे मुक्त विश्वविद्यालय के लिए धन संग्रह करने यूरोप अमेरिका और अफ्रीका गए।

सन 1936 में गांव में शिक्षा के प्रचार के लिए महर्षि कर्वे ने महाराष्ट्र ग्राम प्राथमिक शिक्षा समिति की स्थापना की। जिसने धीरे–धीरे विभिन्न गांव में 40 प्राथमिक विद्यालय खोलें स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद यह कार्य राज्य सरकार ने संभाल लिया।

सन 1915 ईस्वी में महर्षि कर्वे द्वारा मराठी भाषा में रचित आत्मचरित्र नामक पुस्तक प्रकाशित हुयी। 1942 ईस्वी में काशी हिंदू विश्वविद्यालय में उन्होंने डॉक्टर लिट् की उपाधि प्रदान की गयी, 1954 में उनके अपने महिला विश्वविद्यालय ने उन्हें एलएलबी की उपाधि दी, 1955 में भारत सरकार ने उन्हें पदम विभूषण से अलंकृत किया और 100 वर्ष की आयु पूरी हो जाने पर 1957 में मुंबई विश्वविद्यालय ने उन्हें एलडी की उपाधि से सम्मानित किया, 1958 में भारत के राष्ट्रपति ने उन्हें सर्वोच्च

सम्मान भारत रत्न से विभूषित किया, भारत सरकार डाक तार विभाग ने उनके सम्मान में डाक टिकट निकालकर उनके प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट की थी, देशवासी उन्हें महर्षि कहते थे, 9 नवंबर 1962 को 104 वर्ष की आयु में महर्षि कर्वे का देहांत हो गया।

संघर्ष

पितृसत्तात्मक समाज की तानों और बहिष्कार के अलावा महिला आश्रम स्कूल को चलाने के लिए फंडिंग जुटा पाना एक बड़ी समस्या थी बहुत बार उन्हें इधर–उधर से चंदा इकट्ठा करना पड़ता था क्योंकि आश्रम के कामों में व्यस्त होने के कारण उनकी अपनी पति की नौकरी पर असर पड़ता था। इस वजह से कई बार वे सालों तक अपने परिवार से भी नहीं मिल पाते थे, कहते हैं उनके अपने बच्चे और पत्नी बहुत ही गरीबी में रहे, लेकिन उन्होंने अपने महिला आश्रम और विद्यालय को जैसे–जैसे चलाए रखा। सालों तक जगह–जगह जाकर लोगों को समझाते, उन्हें अपनी बेटियों और बहू को शिक्षित करने के लिए जागरूक करते थे, लेकिन रूढ़िवादी समाज उन्हें हमेशा तिरस्कृत ही करता। फिर भी कर्वे ना तो पीछे हटे और ना रुके उन्होंने अपना सफर जारी रखा।

विधवा विवाह जानकारी

महर्षी कर्वे विधवा विवाह के आंदोलन के मुख्य कर्मचारी थे। लॉर्ड विलियम बेंटिक ने सती प्रथा के चाल को रोक दिया, सती प्रथा के रुकने से विधवाओं की संख्या बढ़ने लगी इन विधवाओं को समाज में नगण्य माना जाता था। इसलिए महर्षी धोंडो केशव कर्वे ने इस पर काम करना शुरू किया कि विधवा महिलाओं को पुनर्विवाह का अधिकार मिलना चाहिए। इस कार्य की शुरुआत उन्होंने अपने से ही थी उनकी पत्नी सुधा बाई की मृत्यु 27 साल की कम आयु में ही सन 1896 में डिलीवरी के समय हो गयी थी, उस समय केशव कर्वे की उम्र 43 साल की थी प्रौढ़ावस्था में विदुर हुए पुरुष को दूसरी लड़की से शादी करने की परंपरा थी। बचपन में ही लड़की की शादी हो जाती थी लेकिन अगर पति मर जाए तो उस लड़की को पूरा जीवन विधवा बन कर के गुजारना पड़ता था जो एक नर्क के समान था। समाज की इस प्रथा को बंद करने के लिए डॉ. कर्वे ने पंडिता रमाबाई के शारदा सदन संस्थान में पढ़ने वाली गोंदू बाई नामक विधवा से पुनर्विवाह किया, परंतु यह बात समाज को मान्य नहीं थी, वह अपनी पत्नी के साथ मुरुड चले गए आगे चलकर के गोंदूबाई आनंदी करवे या बाया करवे के नाम से प्रसिद्ध हुयी।

डॉक्टर कर्वे के अनुसार पुनर्विवाह के बाद पुनरुत्थान होना चाहिए इसलिए 21 मई 1994 को कर्वे ने पुनर्विवाह का कार्यक्रम रखा और विधवा विवाह रोकथाम मंडल की स्थापना की। विधवा विवाह का विरोध करने वाले लोगों के लिए इस मंडल की स्थापना की गई थी 1896 में केशव कर्वे ने महिलाओं को इस दलदल से छुटकारा पाने के लिए 6 विधवाओं के साथ ष्अनाथ लड़की बाल श्रम निकालाष् जो बाल विवाह जैसे अन्याय पूर्ण रूढ़ियों पर आधारित था।

देश की पहली महिला यूनिवर्सिटी

1914 में कर्वे ने अपनी नौकरी से इस्तीफा दे दिया और खुद को पूरी तरह से अपने संगठनों के लिए समर्पित कर दिया। जापान में टोक्यो के महिला विश्वविद्यालय के बारे में जानकारी प्राप्त कर कर्वे ने भी तय कर लिया था कि वह भारत में भी सिर्फ महिलाओं के लिए एक यूनिवर्सिटी शुरू करेंगे और इसके लिए चंदा इकट्ठा करने के लिए उन्होंने विदेश यात्राएं की। लगभग ढाई लाख रुपए के चंदे के साथ कर्वे ने यूनिवर्सिटी की नींव रखी लेकिन पैसों की कमी के चलते काम बीच में ही रोकना पड़ा। ऐसे में मुंबई के मशहूर उद्योगपति दामोदर ठाकरसी ने उनकी मदद की और इस विश्वविद्यालय का नाम ठाकुर जी की माता के नाम पर श्री दामोदर ठाकरसी विश्वविद्यालय रखा और यूनिवर्सिटी को शुरु की। माात्र 5 छात्राओं के साथ साल 1916 में यह यूनिवर्सिटी शुरू की गई लेकिन आज इस यूनिवर्सिटी के 26 कॉलेजों में 70000 से भी ज्यादा छात्राएं पढ़ती हैं। लड़कियों के 3 स्कूल भी इस यूनिवर्सिटी के अंतर्गत आते हैं और आर्ट, मैनेजमेंट, टेक्नोलॉजी डिपार्टमेंट यूनिवर्सिटी में संचालित है देश के लिए निस्वार्थ भाव से काम करने के कारण ही उन्हें महर्षि कर्वे कहने लगे, उन्होंने भारतीय महिलाओं को अंधेरे से निकालकर रोशनी की तरफ के लिए प्रेरित किया उन्होंने भारतीय समाज को अंधविश्वास और कुरीतियों से मुक्त करने में अहम भूमिका निभाई। साल 1926 में विश्व भ्रमण पर भी गए, उन्होंने यूरोप, अमेरिका और जापान की यात्रा की,जहाँ शिक्षा पर हो रही कई कांफ्रेंस में उन्होनें भाग लिया और एक शिक्षाविद के रूप में भारत का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने दुनिया के महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन से मुलाकात की उन्होंने अपनी यूनिवर्सिटी के विकास के लिए चंदा इकट्ठा किया और वापस भारत आए शिक्षा के साथ–साथ कर्वे जातिवाद के मुद्दों पर भी काम करते रहे वे गांव–गांव घूमकर लोगों को समझाते उन्हें जागरुक करते। गांव में शिक्षा के प्रसार के लिए कर्वे ने ष्महाराष्ट्र ग्राम प्राथमिक शिक्षा समितिष् की स्थापना की जिसने धीरे–धीरे गांव में 40 प्राथमिक अध्यापक विद्यालय खोले। इसके बाद उन्होंने समता संघ की शुरुआत की, जिसके तहत उनका उद्देश्य लोगों को यह समझाना था कि सभी इंसान समान है और सभी को शिक्षा का समान अधिकार है।

विधवा मैरिटल मंडल की स्थापना

रायबहादुर गणेश गोविंद गोखले ने धोंडो केशव कर्वे के कार्य देखकर भीगना की अपनी 6 एकड़ जमीन और संस्था निर्माण के लिए ₹750 दान में दिए इसके माध्यम से ढूंढो केशव कर्वे ने एक कुटिया बनाई यह कुटिया स्त्री शिक्षण संस्थान की गंगोत्री है।

1900 में अनाथ बालिकाश्रम को हीगना में स्थानांतरित कर दिया गया यहां पर धोंडो केशव कर्वे ने विधवा महिलाओं के लिए वस्ती गृह का निर्माण किया। धोंडोकेशव कर्वे पंडिता रमाबाई और ईश्वर चंद्र विद्यासागर से बहुत प्रभावित थे। उन्होंने हरबर्ट स्पेंसर के विचारों का अनुसरण किया।

महर्षी धोंडो केशव कर्वे शैक्षणिक कार्य

1. डॉक्टर कर्वी के जीवन का उद्देश्य महिलाओं को शिक्षित करना था अगर समाज में सुधार की जरूरत है तो महिला को साक्षर बनाना जरूरी है स्त्री को शिक्षित करने का अर्थ है अपने पूरे परिवार को साक्षर बनाना इस उद्देश्य से प्रेरित होकर महिलाओं को शिक्षित करना और सामाजिक अधिकार देना उसके लिए काम करना 1996 में महर्षी धोंडो केशव कर्वे में पुणे में के पास भीगना अभी करवे नगर में एक गांव में विधवा महिलाओं के लिए एक आश्रम स्थापित किया इस आश्रम में महिला विद्यालय की स्थापना 1960 में हुई महर्षि केशव कर्वे की 20 वर्षीय मोहनी पार्वतीबाई अठावले इस स्कूल की पहली छात्रा थी।
2. 1960 में पुणे में महिला विद्यालय की भी स्थापना की जो कि लड़कियों के लिए एक रेजिडेंट स्कूल था और यहां उन्हें नौकरी के लिए ट्रेंड किया जाता था।
3. आश्रम स्कूल चलाने के लिए मनुष्य बल्कि निर्मित करने के लिए सन 1910 को निष्काम कर्मठ की स्थापना की आगे कार्य बढ़ते ही गए सभी संस्था का एकत्रीकरण करके भीगने स्त्री शिक्षण संस्थान और महर्षि कर्वे स्त्री शिक्षण संस्थान स्तर से उसका नामांकन किया गया सन 1996 को उनके

कार्यों को 100 साल पूरे हुए इस कारण महर्षी करवे स्त्री शिक्षण संस्थान की तरफ से शैक्षणिक और सामाजिक कार्य करने वाले महिला को बाया करवे पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है

4. जापान के महिला विद्यापीठ को विजिट देने के बाद महर्षी धोंडो केशव कर्वे ने सन 1916 में भारत के प्रथम महिला विद्यापीठ की स्थापना पुणे में की महिला को मातृभाषा और गृह उपयोगी शिक्षण मिलना चाहिए यह उनका उद्देश्य था
5. सन 1920 में सर विट्ठल दास जी ठाकर्षी ने करवे ने महिला विद्यापीठ को 15 लाख की देखी थी और महिला विद्यापीठ का नाम श्रीमती नत्थीबाई दामोदर दामोदर जी ठाकुर सी कर दिया गया इस विद्यापीठ का मुख्य कार्यालय पुणे से मुंबई लेकर गए बहुत प्रज्ञा वत महिला ने विद्यापीठ के कुलगुरु पद पर विराजमान हुए
6. इंग्लैंड जर्मनी जापान अमेरिका इस देश का दौरा करते हुए धोंडो केशव कर्वे ने अपने संस्थान और संकल्प के बारे में पूरी दुनिया की जानकारी दी पूरी दुनिया में जानकारी दी भर लेन में रहते हुए वह अल्बर्ट आइंस्टीन से मिला जो सापेक्षता वाद के अग्रदूत थे भर लेन में होम साइंस स्कूल को देखकर टोक्यो में महिला स्कूल देखा सभी राष्ट्रों का अभ्यास करके अपने विद्यापीठ में उन विचारों को चलाने दिया
7. 1936 में महाराष्ट्र ग्राम प्राथमिक शिक्षा महामंडल की स्थापना हुई इस संस्थान के माध्यम से पूना शहर में लड़कों के लिए एक स्कूल खोला गया।

महर्षी धोंडो केशव कर्वे की खास बातें

- 1952 में बनारस विद्यापीठ ने डी लिट की उपाधि से सम्मानित किया।
- 1951 में पुणे विद्यापीठ और 1954 में महिला विद्यापीठ ने डी लिट उपाधि से सम्मानित किया।
- भारत सरकार ने उन्हें उनकी जन्म शताब्दी के दिन 1958 में भारत रत्न से सम्मानित किया।
- धोंडो केशव कर्वे ने निष्काम कर्मठ यह संस्था की स्थापना की क्योंकि उन्हें आश्रम और स्कूल इसके लिए कौशल पूर्ण मनुष्य वर्ल्ड निर्माण करना था।
- महर्षी धोंडो केशव कर्वे ने विधवा महिला के लिए अनाथ बालक आश्रम की स्थापना की।
- महर्षि कर्वे ने क्षमता संघ की स्थापना की।
- केशव कर्वे के मन में आत्मसम्मान और स्वाभिमान के बीच उनकी माने रहते थे पहले ही उनकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी लेकिन उनकी मां कभी भी उन्हें किसी से कोई दान दक्षिणा नहीं रहने देती थी अपनी मां के बाद उनकी एक शिक्षक और मार्गदर्शक विनायक लक्ष्मण सुमन का उन पर काफी गहरा प्रभाव था।
- गांव के लोगों को से देश में घटी घटनाओं की जानकारी होनी चाहिए ऐसा कर्वे चहाते थे अतः वे अपनी ऊंची आवाज में अखबार पढ़कर सुनाते थे यहीं से समाज के प्रति कार्य में जागरूकता बढ़ी और उन्होंने बहुत से विचारक हो औ र समाज सुधारकों को पढ़ना शुरू किया।

उनके कार्यों की कुछ इस कदर बढ़ने लगी कि खुद गांधी जी ने उनके सम्मान में अपने साप्ताहिक पत्र इंडियन ओपिनियन में उनके बारे में लिखा गांधीजी दक्षिण अफ्रीका में खुद को करने के लिए लिखने से नहीं रोक पाए।

संदर्भ सूची

1. डॉ. महर्षि कर्वे की जीवनी अप्रैल 30,2018
2. The better India Nisha Dagar] Nov9, 2019
3. Two Autobiographical works: Atmawrutta (1928)
4. Looking back in English
5. जी. एल. चन्दावरकर: प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार
6. महर्षि धोंडो केशव कर्वे– विकास खोले
7. E book & Anamtha kolla